# 27

# दक्षिण भारत की संत काव्यों में जीवन मूल्य

डॉ. रंजित एम

संत वस्तुतः एक स्वभाव और मनोवृत्ति का नाम है। इस बारे में 'संत ह्रदय नवनीत समाना' या 'संतों के मन रहत है, सबके हित की बात' जैसे उद्धरण प्रसिद्ध हैं। संत के लिए ब्रह्मचारी, गृहस्थ या वानप्रस्थी होना अनिवार्य नहीं है। जो निजी या पारिवारिक हितों से ऊपर उठ चुका हैय जिसने अपना तन, मन और धन समाजहित मे अर्पित कर दिया है। वह संत और महात्मा है। भले ही उसकी अवस्था, शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति कुछ भी हो

भारत मे संन्यास की परम्परा बहुत पुरानी है। चार आश्रमो मे सबसे अंतिम संन्यास आश्रम है। इसका अर्थ है कि अब व्यक्ति अपने सब घरेलू और सामाजिक दायित्वों से मुक्त होकर पूरी तरह ईश्वर की आराधना करे तथा अपने अगले जन्म के लिए मानसिक रूप से स्वयं को तैयार करे। 75 वर्ष के बाद इस आश्रम मे जाने की व्यवस्था हमारे मनीषियों ने किया है। इस समय तक व्यक्ति का शरीर भी ऐसा नहीं रहता कि वह कोई जिम्मेदारी लेकर काम कर सके। अतः घरेलू काम बच्चों को तथा सामाजिक काम नई पीढ़ी को सौंपकर प्रभुआश्रित हो जाना ही संन्यास आश्रम है।चारों युगों मे भिन्न भिन्न गुरुओं की कल्पना की गयी. अब हम दक्षिण भारत के भक्त कवियो के बारे में विचार करेंगे।

## तमिल भक्ति साहित्य

मध्ययुगीन काल इंपीरियल चोलों की अवधि है जब पूरे दक्षिण भारत एक ही प्रशासन के तहत किया गया था. 11 वीं और 13 वीं शताब्दी के बीच की अवधि के दौरान जो चोला सत्ता अपने चरम सीमा पर था, वहाँ अपेक्षाकृत कुछ विदेशी घुसपैठ कर रहे थे और तमिल लोगों के लिए जीवन में शांति और समृद्धि के माहौल थे चोल राज मख्यतः दक्षिण भारत,श्रीलंका के भागों में व्याप्त थे।इस



में हुए थे। महान वैष्णव संत रामानुज आतिराजेंद्र चोल और कुलोत्तुंग चोल के शासन काल में रहनेवाले

तमिल नाडू में महादेव के सेवकों के रूप में जीवन बिताये 63 लोगों को नायनार अथवा नायनमार नाम से जाने जाते हैं। उस समय समाज में प्रचलित चारों वर्णों के इसमें शामिल है। वे सृष्टी, स्थिति, संहार, तिरोधान एवं अनुग्रह जैसे पांच क्रियाओं के महादेव को माने वाले थे. अर्थात में शिव ही सब है।कश्मीर में अभिनव गुप्त और दक्षिण भारत में तिरुमूलर शैव सिद्धांत के बारे में एक ही रूप में बताया है .कश्मीर में इसको त्रिक्षास्त्र नाम दिया है तो दक्षिण में आगम शास्त्र .कन्नाप्पार से शुरू होकर सुन्दरमूर्ति स्वामिकल तक के 63 नायनारों की सूचना श्पेरिय पुराणं श नामक रचना में मिलेंगे. उसी अठारह सिद्धों के बारे में भी सूचनाएं उपलब्ध है। अगस्त्यर, नंदी देवर, तिरुमूलर, धन्वन्तरी, श्री पाम्बात्ति आदि उनमें प्रमुख है।ऐसा माना जाता है वे मधुरा के आसपास वत्राप्प नामक जगह में स्थित चतुरगिरी नामक पहाड़ को पूजने आये थे। चतुरागिरी को वे महादेव मानकर पूजा कर रहे थे।

अद्वैत सिद्धांत के प्रवर्तक आचार्य शंकराचार्य के बाद वैष्णव सम्प्रदाय को प्रमुखता मिला. दसवीं सदी के पूर्व तमिलनाडु में जिए आलवार नाम से विख्यात तमिल भक्त कवियों ने 108 विष्णु मंदिरों के बारे में लिखे है। यह 4000 दिव्या प्रबंध नाम से जाने जाते है .रामानुजाचार्य और माधवाचार्य भी वैष्णव धर्म के प्रचारक थे. पोइगे आलवार, कुलशेखरा आलवार जैसे 12 संतों के नाम यहाँ उल्लेखनीय है। 'आलवार' शब्द का शाब्दिक अर्थ है– ईश्वर की चिंता में डूबे हुए व्यक्ति. श्री रामानुजाचार्य एक प्रमुख वैष्णव आचार्य थे. आपने ब्रह्म सूत्र के अनुवाद किये थे। ऐसा माना जाता है दक्षिण से उत्तर की ओर भक्ति का प्रवाह आपके कारण ही हुए थे।

बारह अल्वारों में एकमात्र महिला थी आंडाल। इनकी भक्ति की तुलना राजस्थान की प्रख्यात कृष्णभक्त कवयित्री मीरा से की जाती है। मीराबाई की तरह आंडाल ने भी श्रीकृष्ण (रंगनाथ) को अपनी प्रेमी मानकर जीवन बिताई . भाव्पूर्नता और दार्शनिकता उनकी रचनाओं में दर्शनीय है। आपकी पूर्वाश्रम के नाम गोदायी थी जो बाद में आंडाल रूप में बदल गयी. उनकी पहली रचना शतिरुप्पवाईश थी .तीस झंदोंवाली इस रचना में आप प्रेमी भगवान् भगवान् की बात कही है।रामायण और महाभारत जैसे थिरुप्पवाई तमिलनाडु में विशेष रूप से महान धार्मिक उत्साह के साथ महिलाओं, पुरुषों, और सभी उम्र के बच्चों द्वारा ... 'नक्कियार तिरुमोली' (हमारी देवी की पवित्र ... तमिल



अंदल ने इस रचना को भारतीय धार्मिक साहित्य की पूरी सरगम में संभवतः अद्वितीय है बनायी है.

तमिल के कंबर ने कम्ब रामायणम लिखे जो रामावातारम नामे से भी जाने जाते है।यिध्यपि यह रचना वाल्मीकी रामायण के आधार पर किये गए है तो भी उसका ठीक अनुवाद भी नहीं है। तमिल नाडू के सर्व श्रेष्ट रचना के रूप में इसको मान्यता है। आलोचक ऐसा कह रहे है कि वाल्मीकी रामयण में जो संशोधन होना था वह कम्बन ने किया।इसलिए तमिल साहित्य के माह काव्य का पद काम्ब रामयण को मिला है। कंबन वैष्णव थे। उनके समय तक बारहों प्रमुख आलवार हो चुके थे और भक्ति तथा प्रपति का शास्त्रीय विवेचन करनेवाले यामुन, रामानुज आदि आचार्यों की परंपरा भी चल पड़ी थी। कंबन के प्रमुख आलवार 'नम्मालवार' (पाँचवे आलवार जो शठकोप या परांकुश मुनि के नाम से भी प्रसिद्ध हैं) की प्रशस्ति की है। कहा तो यहाँ तक जाता है कि कंबन की रामायण रंगनाथ जी को तभी स्वीकृत हुई, जब उन्होंने नम्मालवार की स्तुति उक्त ग्रंथ के आरंभ में की। इतना ही नहीं, कंब रामायण मे यत्र–तत्र उक्त आलवार की श्रीसूक्तियों की छाया भी दिखाई पड़ती है, तो भी कंबन ने अपने महाकाव्य को केवल सांप्रदायिक नहीं बनाया है, उन्होंने शिव विष्णु के रूप (केवल सृष्टिकर्ता) में भी परमात्मा का स्तवन किया है और रामचंद्र को उस परमात्मा का ही अवतार माना है। ग्रंथारंभ मे एवं प्रत्येक कांड के आदि में प्रस्तुत मंगलाचरण के पद्यों से उक्त तथ्य प्रकट होता है। शैवों तथा वैष्णवों मे कंब रामायण का समान आदर हुआ और दोनों संप्रदायों के पारस्परिक वैमनस्य के दूर होने में इससे पर्याप्त सहायता मिली।

'तिरुक्कुरल' के रचयिता तिरुवालुवर का जन्म चेन्नई शहर के आस पास के मैलाप्पूर में हुए थे .मानव जीवन कैसे जीना है इसका वर्णन इस रचना में हुए है। बाइबिल के बाद सबे ज्यादा भाषाओं में अनूदित रचना भी यही है। तमिल साल का उद्भव भी आपके जन्मकाल के अनुसार ही किया जा रहा है. कन्याकुमारी के विवेकान्द स्वामी के स्तूप के पास ही आपका स्तूप निर्मित हुयी है.

ताइवुमानवर का जन्म थंजावूर जिले के वेदारण्य नामक स्थान में हुआ था आपकी क्षमाताओं को मानते हुए तिरुच्चिराप्पल्ली के राजा आपको अपने उपदेष्टा के रूप में चुना और आप उस पद में कर्मरत रहेबाद में आत्म साक्षात्कार के लिए अरुल नदी शिलाचारियर नामक मौन गुरु के पास गए और गुरू के आदेशानुसार जीवन चलाये. आप अपने शिष्यों को बचने की सलाह दी सन 1742 ई. में आपका देहांत हो गया. तमिल्नाडू के राम्नाथं जिला में जन्म लिए वेंकटरामन बाद में रमण महर्षी नाम से विख्यात हुए। अरुणाचल (जो तमिलनाडू) में आपका आश्रम है स्थित है। अरुनाचल अक्श्रमालारुनाचाला पतिकं जैसे कई रचनाओं और आदि शंकर के विवेक चूडामनी,दृग दृश्य विवेक के तमिल अनुवाद आदी के जरिये आपने लोगों में ज्ञान बढाने की कोशिश की.



## केरल के भक्ति साहित्य

कलि युग में श्री गौड़पादाचार्य, गोविनाभागावाद्पादाचार्य और श्री शंकराचार्य गुरु के स्थान में प्रतिष्टित किया गया है वही शंकराचार्य के बारे में हम विचार कर रहे है। मानव को शांति और सौहार्द, राष्ट्रीय चेतना, विश्व बंधुत्व एवं वैदिक संस्कृति का पावन संदेश प्रसारित करने हेतु परम पुज्य श्रीमद् आद्य शंकराचार्य का अविर्भाव 2593 कल्प 509 पूर्व नंदन संवत्, शुभ ग्रहो युक्त वैशाख शुक्ल पंचमी मध्याह्न में केरल स्थित कालडी ग्राम में ब्राह्मण दंपति के यहाँ हुआ था। इनके पिता का नाम शिवगुरू तथा माता का नाम आर्यम्बा था .आचार्य शंकर ने अपने धर्मोद्धार संबंधी कार्यों को अक्षुण करने हेतु भारत के अति सुप्रसिद्ध धर्मों में चार पीठों (मठों) की स्थापना की। पूर्व में जगन्नाथ पूरी में गोवर्धदन पीठ, उत्तर में हिमालय बदरिका आश्रम में ज्योतिंपीठ, पश्चिम में द्वारिका में शारदा पीठ, दक्षिण में शृंगेरीपीठ। इन पीठों में आचार्य शंकर ने अपने चार प्रमुख शिष्यों को पीठाधिपति नियुक्त किया। आज भी ये मठ आध्यात्मिकता के केंद्र हैं। आचार्य शंकर ने सन्यासियों की दस सुविख्यात श्रेणियाँ भी स्थापित की जो गिरि, पुरी, सरस्वती, तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, पर्वत एवं सागर नाम से प्रसिद्ध हैं प्रब्रह्मसूत्र, ग्यारह प्रमुख उपनिषदों एवं 'श्रीमद्भगवद्गीता' पर भाष्य लिख कर आचार्य शंकर अमर हो गए.

एषुत्तच्छन ने मलयालम साहित्य में एक नए युग का संदेश दिया और मलयालम साहित्य को अपनी दो प्रमुख रचनाओं 'अध्यात्म रामायणम्' और 'भारत' द्वारा समृद्ध बनाया। वह प्रथम महान् कवि थे जिन्होने ब्राह्मणों के धार्मिक एवं साहित्यिक एकाधिकार को तोड़ा वह नायर होने के कारण ब्राह्मणेतर था। रूढ़िवादी धार्मिक एवं साहित्यिक वर्ग के लोगों ने उनकी रचना पर अनेक आक्षेप किए। फिर भी वह केरल का बहुत ही लोकप्रिय कवि हुए। उनमें गहन साहित्यिक विद्वत्ता और कठोर आध्यात्मिक अनुशासन था। उसकी रचनाएँ किलिप्पाट्टु (शुंकगीति) शैली में लिखी हुई हैं। अध्यात्म रामायण संस्कृत के अध्यात्म रामायण महाकाव्य का स्वतंत्र अनुवाद है जिसकी रचना १४वीं शताब्दी में किसी अज्ञात लेखक ने की थी। एषुत्तच्छन का वाल्मीकि रामायण की अपेक्षा इस पुस्तक की निष्पक्ष साहित्यिक श्रेष्ठता का चुनाव तत्कालीन भक्तियुक्त वातावरण से अवश्य ही प्रभावित हुआ होगा। केरल में इस पुस्तक की जनप्रियता की तुलना हिंदीभाषी जनता के मध्य रामचरितमानस की लोकप्रियता से की जा सकती है। महाकाव्य के कलात्मक गुणों को कुछ सीमा तक भक्तिरस की प्रधानता ने निर्बल बना दिया है।मलयालम भाषा के पिता के रूप मे आप जाने जाते है

उनका द्वितीय महाकाव्य भारत, जो व्यास के महाकाव्य का अद्वितीय संक्षिप्त विवरण है, इस प्रकार की भक्ति के अत्यधिक बोझ के दोषों से मुक्त है।

का मौका नही मिला है अस्पृश्यता उन्मूलन और काम की गरिमा के बारे मे जो बात उनहोंने कहा है यह आज भी प्रासंगिक है। अगर वह हमारे समय के दौरान जीवित होता तो मै कहना चाहोन्गा की वह एक पूजनीय संत ही है

कनकदास का जन्म हावेरी जिला के कागिनेरे में हुआ था .उनका बचपन का नाम थिम्मापा नायका था. मध्वाचार्य के शिष्य व्यासतीर्था के शिष्य थे आप. हरिदास भक्ति शाखा के प्रमुख वक्ता कनकदास जी को दार्शनिक, कवी ,संगीत निर्देशक आदी रूपो मे माने जा रहे है। कर्नाटिक संगीत के क्षेत्र मे आप के नाम विख्यात है।अपने रचनाओ के जरिये आप यह सन्देश फैलाना चाहा कि दुनिया में सब बराबर है।कोई भी किसी से श्रेष्ट नही है।बदलते दुनिया के साथ बदलना ही सही है। यह सन्देश भी आप अपने दखियानूसी समाज को सिखाया नलचरितम, हरिभक्ति सारा, नरसिम्हा स्तव, रामधन्य चरित, मोहन तरंगिनी आदि आपकी प्रमुख रचनाये है। आपने सांसारिक उपमाओं के जरिये भक्ती को सांगत बनाया. उनके लेखन की विशेषता यह है कि कवि खुद के साथ पाठक को दिखाता है। आपने कहा है

मैं स्वर्ग में तब जा पावूंगा जब मेरे आत्म (मेरे स्वार्थ) चला जावूंगा

रामधन्य चरित में सामाज में से उच्च–नीच भाव का उच्चाटन करने की कोशिश दर्शनीय है। जन भाषा मे आपने द्वैत वाद के सिद्धांतों को लोगों तक पहुँचाया .देशातान और साधुओं की संगती से मिले ज्ञान से आप समाज में परिवर्तन लाने केलिए प्रयुक्त किया .

अगला आचार्य है श्री पुरंदरदास. पुरंदरदास कर्नाटिक संगीत के प्रमुख संगीतकार थे। पुरन्दर वित्तला नाम से ढेर सारे कीर्तन कन्नड़ और संस्कृत भाषों में आपने रची थी।कर्नाटक संगीत सिखाने का व्यवस्थित रूप आपने ही बनाया और माया मालव गौला राग का आविष्कार भी किया .कर्नाटक संगीत के पितामह के रूप में आप जाने जाते है .हिन्दुस्तानी संगीतज्ञ तानसेन के गुरु हरिदास आप के शागिर्द थे .

वीरशैवा भक्ती सम्प्रदाय के प्रमुख कवयित्री थी अक्का म्हाद्वी। कर्नाटक के भक्ती साहित्य में आपको प्रमुख स्थान मिली है .कर्नाटक भक्ती साहित्य में रहस्यावादी कवी क रूप में भी आप जाने जाते है . मीरा बाई और आंडाल के समान अक्का महादेवी भी भगवान् को अपने पाती के रूप में स्वीकारा .मीरा और और आंडाल भगवान् विष्णु को अपने पती के रूप में स्वीकार था तो अक्का चेन्ना मल्लिकार्जुना ( शिव) को। अक्का महादेवी भारत के पुरुष प्रधान समाज में जल्द से जल्द नारीवादियों में था. वह एक रहस्यवादी द्रष्टा कवि और समाज सुधारक थे. कन्नड़ भाषा में लिखित अपने वचनों में देशातान और साधुओं की संगती से मिले ज्ञान को आपने समेट ली है. जिस समाज में नारी को पढाई करने



में कई मुश्किलो को सामना करना पड रहे थे उसी समाज में आप जैसे महतियाँ भी थी,जिनको सुनने पढ़े लिखे लोग एकत्रित होते थे . देखिये उनकी कुछ पंक्तियाँ

*मैं एक सुंदर से प्यार करती हूँ*
*उसे न तो मृत्यु है न क्षय*
*कोई जगाह नही है या पक्ष*
*कोई अंत नहीं है और न ही दाग.*
*मैं प्यार करता हूँ उसे माँ हे, सुनो.*
*उसे कोई बंधन नही और न ही डर*
*कोई कबीले भूमि नही कोई स्थल भी नही*

प्रभु, जो अन्यथा अल्लामा, अल्लामा प्रभु या प्रभुदेवरु के रूप में जाना जाता है, शायद 12 वीं सदी के बहुत शुरुआत में पैदा हुआ था. आपका जन्म शिवमोग्गा जिले में हुए थे। आपके काव्यात्मक शैली रहस्यवादी और गुप्त मांने जाते है। लिङ्गयता सम्प्रदय के त्रि मर्धतियोन मः एक थे अल्लामा .बसवन्ना और अक्का महदेवी के बाद आप के ही नाम आते है .उनके द्वारा निर्मित साहित्य शाखा वचन साहित्य कहा जता है. देखिये कुछ पंक्तियाँ –

*हे! गुफाओं की भगवान!*
*यदि पहाड़ को ठंडा लगता है,*
*उसे किस्के सहारे सम्हालेङ्गे*
*यदि भक्त संसार में है,*
*वे उसके साथ क्या तुलना करेंगे?*[8]

*तेलुगु भक्ति साहित्य*

श्री निम्बार्काचार्य के जन्म आंध्रा प्रदेश के वैदूर्या शहर में हुए थे .द्वैताद्वैत सिद्धांत के प्रवर्तक के रूप में आप विख्यात हुये।कर्नाटक राज्य में जन्म लिए मध्वाचार्य के नाम भी यहाँ उल्लेखनीय है। आन्ध्र प्रदेश के एक प्रमुख वैष्णव आचार्य थे कित्ताम्बी श्रीनिवास आचार्य।अहोबिला नामक जगह के रहनेवाले थे आप।यहाँ विष्णु भगवान् के नरसिम्ह अवतार के 9 रूप की प्रतिष्टा हुई है

कुमारागिरी वेमा रेड्डी तेलुगु साहित्य के विख्यात कवी थे। आप वेम्ना नाम से भी जाने जाते है, योगा, नैतिकता एव परमात्मा के बारे में आपने अपना विचार प्रस्तुत किये है। पूरे दक्षिण भारत में घुमते हुए आपने जनसामान्य की भाषा में अपना विचार प्रस्तुत किया. देखिये तेलुगु पंक्तियों के अनुवाद

*'लोहा टूट जाने पर कई बार जुड़ा पायेंगे*
*मगर दिल टूटने पर जुड़ नही पायेंगे;*
*'एक बूँद पानी सीपी के अन्दर मोती बन जाती है*

अनुक्रम
1. रैदास के साहित्य
मूल्य
2. विमल रैदास की व
मूल्य
3. रहीम के काव्य में नै
का अनुशीलन
4. रामचरितमानस :
भक्ति में जीवन मूल्य
5. रैदास के साहित्य में
मूल्य
6. प्रेममार्गी कवियों के
आध्यात्मिक एवं साम
7. रैदास के साहित्य में
मूल्य
8. कबीर के काव्य में जी
कल भी आज भी
9. समाजवादी मूल्यों
कबीर
10. कबीर के साहित्य में
का मूल्य
11. कबीर साहित्य में धर्म
एवं मूल्य
12. कबीर साहित्य में जीव
मूल्य
13. कबीर साहित्य में स
मूल्य
14. तुलसीदास के साहित्य
मूल्य
15. भक्तिकालीन साहित्य
की धर्मनिरपेक्षता में जीव
16. भारतीय साहित्य में ई
परिकल्पना एवं जीवन म
17. रहीम के काव्य में मानवी
18. तुलसीदास जी के सा
जीवन मूल्य
19. संत कबीर के सा
समाजवादी मूल्य

# अनुक्रम


1. रैदास के साहित्य में सामाजिक मूल्य — 09
   **अश्विनी कुमार आलोक**
2. विमल रैदास की वाणी में जीवन मूल्य — 14
   **डॉ. राजन यादव**
3. रहीम के काव्य में नैतिक-मूल्यों का अनुशीलन — 24
   **सतीश कुमार भारद्वाज**
4. रामचरितमानस : दर्शन एवं भक्ति में जीवन मूल्य — 34
   **चारू रानी**
5. रैदास के साहित्य में सामाजिक मूल्य — 42
   **डॉ. कुसुम लता**
6. प्रेममार्गी कवियों के काव्य में आध्यात्मिक एवं सामाजिक मूल्य — 45
   **डॉ. राजनारायण अवस्थी**
7. रैदास के साहित्य में सामाजिक मूल्य — 50
   **मीरा द्विवेदी**
8. कबीर के काव्य में जीवन मूल्य : कल भी आज भी — 54
   **जहीन अहमद (शिक्षक)**
9. समाजवादी मूल्यों के कवि कबीर — 61
   **नरेश कुमार**
10. कबीर के साहित्य में समानता का मूल्य — 65
    **कान्ता देवी**
11. कबीर साहित्य में धर्मनिरपेक्षता एवं मूल्य — 68
    **खुशवन्त कुमार माली**
12. कबीर साहित्य में जीवन आदर्श मूल्य — 72
    **राजख्यालिया**
13. कबीर साहित्य में समाजवादी मूल्य — 80
    **सन्तोष कुमार**
14. तुलसीदास के सहित्य में आदर्श मूल्य — 88
    **प्रीति गुप्ता**
15. भक्तिकालीन साहित्य : कबीर की धर्मनिरपेक्षता में जीवन मूल्य — 92
    **डॉ. मो. मजीद मियाँ**
16. भारतीय साहित्य में ईश्वर की परिकल्पना एवं जीवन मूल्य — 99
    **पी.के. जयलक्ष्मी**
17. रहीम के काव्य में मानवीय मूल्य — 102
    **संगीता रानी**
18. तुलसीदास जी के साहित्य में जीवन मूल्य — 106
    **डॉ विदुषी शर्मा**
19. संत कबीर के साहित्य में समाजवादी मूल्य — 114
    **इसरार खान**
20. स्वयं से बात करना सिखाती है जाम्भोजी की वाणी — 118
    **चंद्रभान बिश्नोई**
21. रामानंद व उनके शिष्यों के सामाजिक व धार्मिक मूल्य — 123
    **डॉ. विजय हिन्दू राव पाटिल**
22. जायसी की रहस्य भावना — 129
    **डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय**
23. जायसी के काव्य में सांस्कृतिक मूल्य — 136
    **कंचन शर्मा**
24. कबीर का काव्य में धार्मिक मूल्य — 142
    **कुमकुम पाण्डेय**
25. मीरा के काव्य में लोक जीवन के सहज मूल्य — 146
    **श्रवण कुमार चिहार**
26. संत रैदास के सामाजिक चेतना में मूल्य — 149
    **डॉ. नीलम देवी**
27. दक्षिण भारत की संत काव्यों में जीवन मूल्य — 154
    **डॉ. रजित एम.**
28. भक्तिकालीन संत कवियों के जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता — 164
    **संजय कुमार**
29. संत गरीबदास की वाणी में नैतिक मूल्य — 169
    **डॉ. मुकेश कुमार**
30. मीरा पदावली में पारिवारिक मूल्य — 174
    **मीनाक्षी**
31. रामकाव्य में मूल्यों का सार — 179
    **सुमन रानी**

# भक्तिकालीन साहित्य में जीवन-मूल्य

सं. संजय कुमार